B.Ed. 1st year (19-21)
Unit-5 Paper-C1

10/06/20

DATE : / /20
PAGE :

By- Seema Kumari

अभिवृत्ति (Attitude) :-

Introduction :- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसकारण उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास समाज में ही होता है। साथ ही व्यक्ति के संपूर्ण का एक महत्वपूर्ण पक्ष या पहलू उसकी अभिवृत्तियाँ है जिसे Attitude भी कहा जाता है जो एक मनोसामाजिक अवधारणा है जिसमें व्यक्ति द्वारा किये गये विभिन्न व्यवहारों को दर्शाया जाता है।

इसप्रकार व्यक्ति के अभिवृत्तियों का निर्धारण विभिन्न वस्तुओं, व्यक्तियों, संस्थाओं, स्थितियों, क्रियाकलापों तथा योजनाओं आदि के प्रति उसके विशेष विचारों द्वारा होता है जो व्यक्ति के विभिन्न अभिवृत्तियों का निर्धारण कर उसके व्यवहारों को प्रदर्शित करता है अतः यह व्यक्ति के विशेष गुणों और व्यवहारों को दर्शाने वाला अत्यंत महत्वपूर्ण प्रत्यय है।

अभिवृत्ति का अर्थ (Meaning of Attitude) :-

अभिवृत्ति व्यवहार को दिशा प्रदान करने वाली वह अर्जित प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को किसी विशेष वस्तु या वस्तुओं के प्रति एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने को तत्पर करती है ताकि वातावरण के अनुसार परिस्थितियों में कोई प्रतिकूल परिवर्तन न हो।

अर्थात अभिवृत्ति व्यक्ति के मनोभावों या विश्वासों को इंगित करती है कि व्यक्ति किसी वस्तु विशेष के प्रति क्या महसूस

Scanned with CamScanner

करता है। अतः अभिवृत्ति एक प्रकार की मानसिक और शारीरिक अवस्था है जो व्यक्ति को किसी एक परिस्थिति में एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने को प्रेरित करती है।

* **अभिवृत्ति की परिभाषा :-**

* **ड्रेवर के अनुसार :-** "व्यवहार को कोई एक दिशा प्रदान करने वाली प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक, तत्परता का नाम ही अभिवृत्ति है।"

* **थर्स्टन के अनुसार :-** "अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु से संबंधित धनात्मक या ऋणात्मक प्रभाव की मात्रा है।"

* **अभिवृत्ति की विशेषताएँ :-**

(1) इसका संबंध किसी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति योजना आदि से होता है।

(2) यह धनात्मक अथवा ऋणात्मक भी हो सकता है।

(3) इसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार को निश्चित दिशा प्रदान किया जाता है।

(4) इसमें व्यक्ति - वस्तु संबंध पाया जाता है।

(5) अभिवृत्तियों को वातावरण से अर्जित किया

जाता है।

5) इसका क्षेत्र व्यापक होता है।

* अभिवृत्ति -निर्माण संबंधित कारक :-

→(i) शारीरिक वृद्धि एवं विकास।

→(ii) बौद्धिक विकास।

→(iii) संवेगात्मक विकास।

→(iv) सामाजिक विकास।

→(v) चारित्रिक एवं नैतिक विकास।

→(vi) घर एवं परिवार।

→(vii) सामाजिक - आर्थिक वातावरण

* अभिवृत्ति निर्माण में शिक्षकों की भूमिक

:- अभिवृत्तियाँ पूर्णतः स्थायी नहीं होती। वातावरण एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते रहती है। अतः विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों में वांछित परिवर्तन लाने में माता-पिता के साथ-साथ अध्यापकों तथा समाज के सभी उपस्थित सदस्यों, विद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं द्वारा मिलजुल कर प्रयास करना चाहिए। इसके लिए विद्यालयों में

PAGE :

विद्यालयों को छात्रों के सर्वांगीण विकास पर पूर्ण रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए तथा उनके परिवेश संबंधि बातों को इस तरह से संगठित किया जाना चाहिए कि उन्हें वांछित अभिवृत्तियों को ग्रहण करने तथा अवांछित अभिवृत्तियों से दूर रहने या उनका त्याग करने की प्रेरणा प्राप्त होती रहे।

चूँकि यह एक अर्जित व्यवहारिक ज्ञान होता है जिसे विद्यार्थियों के समक्ष साकारात्मक और उचित वातावरण तथा उदाहरणों के माध्यम से प्रदान किया जा सकता है अतः बालकों के अभिवृत्ति निर्माण में तथा विकास पर विद्यालय, अध्यापक और मित्र-मंडली के व्यवहार के साथ-साथ पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधियों तथा स्कूल की अन्य गतिविधियों का गहरा प्रभाव पड़ता है।